बाइबल टीचर

वर्ष 20 | अप्रैल 2023 | अंक 5

सम्पादकीय

क्या मसीहीयों के लिये नाचना उचित है?

नाचने के विषय में कई लोग यह प्रश्न करते हैं कि क्या मसीहीयों को नाच करना चाहिये या नहीं। इसके विषय में लागों के अलग अलग विचार हैं। कई लोग जो बाइबल की बातों से जुड़े हुए हैं यह बात पसंद नहीं करते तथा कुछ लोग या मसीही इस बात में कोई बुराई नहीं समझते। क्या नाचना हम मसीहीयों के लिये सही है? मैंने अपने जीवन में कई स्थानों पर स्त्री-पुरूषों को नाचते हुए देखा है और कई बार यह देखा जाता है कि कई स्त्रियां और पुरूष इस प्रकार से अपने शरीरों को हिलाते और ऐसी हरकतें करते हैं जो बहुत ही शर्मनाक और गन्दी लगती है। कई बार नाच करते समय शरीर का अंग प्रदर्शन भी बहुत किया जाता है।

एक विद्वान ने नाचने के विषय में कहा था कि यह क्रिया संगीत पर अपने शरीर को हिलाना डुलाना है। आज बहुत सारे स्कूल तथा संस्थाएं है नाच को बढ़ावा देते हैं। कुछ टीवी शो भी आज नाच को बढ़ावा देते हैं। परन्तु मसीही लोग ऐसे कार्यों से दूर रहते हैं। बाइबल कहती है कि मसीही लोगों ने शरीर के कामों को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। (गल. 5:24)। मसीही माता-पिता को अपने बच्चों को परमेश्वर की बातों के निकट अधिक लाना चाहिये और उन्हें ऐसी बातों के लिये प्रोत्साहित नहीं करना चाहिये।

पता नहीं आप इसके विषय में क्या सोचते हैं? आप सोचिये कि क्या नाचना मसीहीयों के लिये सही है या नहीं? परन्तु जहां तक मैं सोचता हूं बाइबल के अनुसार यह अनुचित है। बाइबल बताती है कि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और यह एक-दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। पौलूस गलतियों 5:21 में बताता है कि लीलाक्रीड़ा-मतवालापन यह शरीर के गंदे काम है। एक और बात उसने मसीहीयों को बोली थी कि यदि तुम आत्मा के द्वारा जीवित हो तो आत्मा अनुसार चलो भी। (5:25)। बाइबल में जो शब्द

लीलाक्रीड़ा इस्तेमाल हुआ है, उसका अर्थ है ज़ोर-ज़ोर से शरीर को मटकाना या झूम-झूम कर लोगों के सामने झटके लगाना और जहां पर स्त्री-पुरूष एक साथ मिलकर ऐसा नाच करते हैं वहां कई बार मन में बुरे विचार भी आ सकते हैं जोकि एक मसीही व्यक्ति को शोभा नहीं देता। रोमियों के 13 अध्याय के 13-14 पदो में प्रेरित ने कहा था, ''जैसा दिन को सोहता है वैसा ही हम सीधी चाल चलें न कि लीलाक्रीड़ा और पियक्कड़पन, न व्यभिचार और न लुच्चपन में और न झगड़े और डाह में बरन प्रभु यीशु को पहिन लो और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो। जिन लोगों ने सच्चे मन से बपतिस्मा लेकर यीशु को पहिन लिया है उनका जीवन मसीह अनुसार होता है। वे संसार के शारीरिक कार्यों में जो अशोभनीय है भाग नहीं लेते।

जब पौलूस कोरिन्थ में मसीहीयों से बात कर रहा था तब उसने उनसे कहा, ''तुम अभी तक समझ रहे होगें कि हम तुम्हारे सामने प्रत्युत्तर दे रहे हैं, वह कहता है, हम तो परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीही में बोलते हैं और हे प्रियों, सब बातें हम तुम्हारी उन्नति के लिये कहते हैं। क्योंकि मुझे डर है कहीं ऐसा न हो कि मैं आकर जैसे चाहता हूं वैसे तुम्हें न पाऊ, और मुझे भी जैसा तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओं कि तुम में झगड़ा डाह, क्रोध, विरोध, ईर्ष्या, चुगली, अभिमान और बखेड़े हों। फिर वह कहता है कि ''मेरा परमेश्वर कहीं मेरे फिर से तुम्हारे यहां आने पर मुझ पर दबाब डाले और मुझे बहुतों के लिये फिर शोक (दुख) हो। जिन्होंने पहिले पाप किया था, और उस गन्दे काम और व्यभिचार और लुचपन से जो उन्होंने किया, मन नहीं फिराया।'' (2 कुरि. 12:19-21)। एक बात जो पौलूस ने बोली वह बहुत ही सीधी और खरी है। उसने गलतियों 5:21 में कहा था, कि डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और काम है, ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे। क्या नाचना और शरीर को दूसरों के सामने ठुमके लगाकर पर्दर्शित करना उचित है?

आजकल जो नाच देखा जाता है उसमें आपको क्या-क्या नज़र आता है। शायद उससे आपका मनोरंजन होता है परन्तु आपकी बेटी, पत्नी या घर का कोई सदस्य पूरी सभा में जब इस प्रकार से नाच करते हैं तो कुछ लोग शायद अंदर से प्रसन्न नहीं होते। और यह बात सत्य है। कई बार जिस प्रकार से औरतें और आदमी जब मिलकर नाचते हैं तो यह बात बहुत ही अशोभनीय लगती है। एक मसीही स्त्री-पुरूष को इसके बारे में विचार करना चाहिये। हमें सोचना चाहिये कि मेरे इस नाचने से मेरे छोटे बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? एक मसीही होते हुये मैं किस प्रकार का प्रभाव दूसरों पर छोड़ रही हूं? कृप्या दूसरे भाई बहनों के लिये ठोकर का कारण न बनें। किसी भी कार्य में भाग लेने से पहिले यह सोच लें कि आन कौन है। आप परमेश्वर द्वारा चुने गये हैं, वह कहता है कि आप जगत की ज्योति हो, इसलिये तुम्हारा उजियाला लोगों के सामने चमके, ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता कि जो स्वर्ग में बढ़ाई करें। (मत्ती 5:14-16)। अपनी स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ। (1 पतरस 2:16)।

कई जवान लड़के और लड़कियां ऐसा सोचते हैं कि नाचने से हमें लोग देखकर हमारी बड़ाई करेंगे और हमारी तारिफ़ करेंगे और कई माता-पिता भी बड़े खुश होते हैं

परन्तु सब माता-पिता ऐसा नहीं सोचते। कुछ कुछ माता-पिता का विचार अलग है। कुछ माता-पिता बड़े अनुशासन वाले तथा आर्दशवादी होते हैं। इसलिये वे आरम्भ से ही अपने बच्चों को शिक्षा देते हैं कि ऐसी बातों से दूर रहें जिससे बुराई उत्पन्न होती है। एक मसीही लड़की के विषय में मैंने पढ़ा था। इस लड़की को उसके स्कूल के स्टाफ़ ने सम्मान देने के लिये चुना था। पर उस लड़की को स्कूल की एक बात माननी थी कि उसे स्कूल के प्रोग्राम में डांस करना हैं। परन्तु मसीही लड़की ने कहा कि मैं डांस नहीं करूगी और रानी का सम्मान यदि आपने मुझे नहीं देना तो कोई बात नहीं। जब स्कूल का प्रोग्राम हुआ तब स्कूल वाले उसके इस निश्चय से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने रानी का सम्मान उसी मसीही लड़की को दिया। यह लड़की कलीसिया के कार्यों में भाग लेती है और सन्डे स्कूल भी सिखाती है। एक अच्छे और दृण मसीही रहकर आप कई बातों को न कह सकते हैं। एक सच्चा मसीही गलत बातों के लिये न कह सकता है। यदि आपको कोई विवाह में या किसी जन्मदिन पार्टी में दारू देकर कोई कहे कि भाई आज तो चख लो, तो आप में न कहने की दृण इच्छा होनी चाहिये।

मैं ऐसे बहुत सारे मसीही लोगों को जानता हूं जिनके सामने बहुत से दुनियावी शानोशोकत, और लालच आये परन्तु उन्होंने कह दिया नहीं। यीशु ने कहा था याद है आपको? शैतान से कहा था मुझसे दूर हो जा। आपको एक मसीही होते हुए यीशु को अपने जीवन में उतारना है और उसके जैसा बनना है। बाइबल कहती है कि, ''सब बातों को परखो जो अच्छी हैं उसे पकड़े रहो और सब प्रकार की बुराई से बचें रहो।'' (1 थिस्स. 5:21-22)। प्रेरित पतरस ने मसीहीयों को कहा था, ''हे प्रियो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, कि तुम अपने आपको परदेसी और यात्री जानकर उन संसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती है बचे रहो।'' (1 पतरस 2:11)। मसीहीयों के लिये एक बड़ा सवाल यह है कि आप इस बात पर विचार करें कि नाचना क्या आत्मा का फल है या शरीर का काम है। आप परमेश्वर द्वारा चुने हुए हैं इसलिये उसके अनुसार चलें भी। (2 पतरस 2:9-11)।

क्या आपका जीवन सुरक्षित है?

सनी डेविड

आज हमारा संसार बड़ी ही तेज रफ्तर से आगे बढ़ रहा है। उन्नति के इस युग में सुरक्षा की आवश्यकता को मनुष्य सबसे अधिक अनुभव करता है। चाहे हम घर के भीतर हों या घर के बाहर हमें अपनी सुरक्षा का हमेशा ध्यान रहता है। हम किसी ऐसी गाड़ी में बैठकर सफर नहीं करना चाहते जिसमें हम अपने आप को असुरक्षित अनुभव करते है। अपनी सुरक्षा का ध्यान रखे बिना हम कहीं जाना नहीं चाहते। और न केवल आज लोग स्वयं अपनी ही सुरक्षा की ओर ध्यान देते हैं। परन्तु उन्हें इस बात की चिंता लगी रहती है, कि उनकी मृत्यु के बाद उनके परिवार का क्या होगा? सो अपने परिवार की सुरक्षा

के लिये लोग अपना जीवन बीमा कराते है। अपने पैसे को घर में न रखकर लोग आज उसे डाकघर या बैंक में जमा करवाते हैं। और अपने घर के दरवाजे को केवल यों ही बंद करने के विपरीत वे उसमें एक मजबूत ताला लगवाते है। यानि इन सब बातों से हम सीखते हैं कि मनुष्य आज अपनी और अपने परिवार की ओर अपनी सम्पत्ति के प्रति कितना अधिक चिंतित है। उसे सुरक्षा की चिंता है।

एक बार की बात है कि प्रभु यीशु के उपदेश को सुनने के लिये लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। जब शाम का समय हुआ तो यीशु ने उन लोगों को भोजन खिलाने का निश्चय किया। परन्तु लोगों की गिनती पांच हजार की थी, और एकाएक इतने अधिक लोगों के लिए भोजन का प्रबंध करना मुश्किल ही नहीं परन्तु असंभव था। किन्तु तभी यीशु को पता चला कि भीड़ में एक लड़के के पास थोड़ा सा भोजन है, सो यीशु ने उस लड़के से उस भोजन को ले लिया। फिर प्रभु ने उस भोजन के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया। और फिर अपने चेलों को यीशु ने आज्ञा दी कि प्रत्येक मनुष्य को उसकी आवश्यकता अनुसार भोजन बांट दिया जाए। सो उस दिन प्रभु के इस सामर्थपूर्ण काम के फलस्वरूप न केवल पांच हजार लोगों ने भर-पेट भोजन खाया परन्तु बाइबल की पुस्तक का लेखक हमें बताता है कि बारह टोकरें भोजन के बचे हुए टुकड़ों के उठाए गए। प्रत्यक्ष ही है, कि प्रभु के इस सामर्थपूर्ण अश्चर्यजनक कार्य को देखकर लोग बड़े ही प्रभावित हुए और अनेक उस पर विश्वास भी लाए। फलस्वरूप वे दूसरे दिन फिर प्रभु को ढूंढ़ने लगे, और जब उन्होंने उसे ढूंढ़ लिया तो वे उससे पूछने लगे, कि तू यहां कब आया? परन्तु प्रभु ने उन लोगों से कहा, कि मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि तुम मुझे इसलिये नहीं ढूढ़ते हो कि तुम ने अचम्भित काम देखे, परन्तु वास्तव में तुम मुझे इसलिये ढूंढ़ते हो क्योंकि मैं ने तुम्हें रोटियां खिलाई थी। और तब प्रभु ने उनसे यों कहा कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। (यूहन्ना 6)।

यहां ये लोग, मित्रो उस भोजन को प्राप्त करने के लिये चिंतित थे जो उनकी देह की सुरक्षा के लिये आवश्यक था। परन्तु प्रभु ने उनका ध्यान उस भोजन की ओर दिलाया जिसकी आवश्यकता उनकी आत्मा को थी। वे लोग नाशमान वस्तु की सुरक्षा के लिये चिंतित थे। किन्तु प्रभु ने उनका ध्यान उस वस्तु की सुरक्षा की ओर दिलाया जो अनन्त और अमर है। मित्रो, मैं जगत में अपनी सुरक्षा का प्रबंध कर सकता हूं। मैं अपनी सम्पत्ति और अपने परिवार की सुरक्षा का प्रबंध कर सकता हूं। परन्तु इनमें से कोई भी वस्तु इतनी अधिक महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि मेरी अपनी आत्मा। और यदि मुझे अपने परिवार की वास्तव में चिंता है, यदि मैं उनकी सुरक्षा के लिये चिंतित हूं तो सबसे अधिक और सबसे पहिले मैं उनकी आत्मा की सुरक्षा के लिये चिंता करूंगा। क्योंकि मनुष्य की देह और जगत की हर एक वस्तु नाशमान है। हम उनकी सुरक्षा नहीं कर सकते। हम अपने लिये अच्छे से अच्छे भोजन और टॉनिक और दवाईयों का प्रबंध कर सकते हैं परन्तु इनमें से कोई भी वस्तु मृत्यु से हमारी रक्षा नहीं कर सकती। हम अपनी सम्पत्ति को बड़े बैंक में रख सकते हैं। परन्तु अन्त में हम अपने साथ उसमें से कुछ भी नहीं ले जा सकते। उस

दिन आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं बचेगा, क्योंकि जगत और जगत की प्रत्येक वस्तु नाशमान है, परन्तु आत्मा अमर है। सो मित्रो, कितने अधिक विचारपूर्ण और महत्वपूर्ण है प्रभु यीशु के ये शब्द आज हमारे लिये, कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये करो जो अनन्तकाल तक ठहरता है। इसलिये आज हमारे सामने सबसे बड़ा और सबसे अधिक विचारपूर्ण सवाल यह है, कि क्या हमारा जीवन सुरक्षित है? शायद आप अपना जीवन बीमा करवाने की सोच रहे हों, और कदाचित आप ने करवा भी लिया हो, परन्तु गंभीर प्रश्न यह है कि क्या आप ने अपनी आत्मा का बीमा करवा लिया? क्या आप की आत्मा सुरक्षित है?

परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में हमसे कहता है, कि जगत में प्रत्येक मनुष्य अपने पापों के कारण उससे दूर है (रोमियों 3:23)। क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों 6:23)। अर्थात पाप मनुष्य के उस अनन्त जीवन को छीन लेता है जिसके लिये परमेश्वर ने उसे सृजा था। पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर देता है। और जब मनुष्य मृत्यु के द्वारा अपने शरीर को जगत में छोड़कर चला जाता है, तो वह एक ऐसे स्थान में प्रवेश करता है जहां वह हमेशा तक परमेश्वर से अलग और दूर रहता है। जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो हम उस मनुष्य के विषय में यह कहना पसंद नहीं करते कि वह नरक सिधार गए, परन्तु हम हमेशा यही कहना पसंद करते हैं कि वह स्वर्ग सिधार गए। परन्तु मित्रो, यह एक खुली हुई सच्चाई है, कि पाप के भीतर मरके मनुष्य परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता। कोई मनुष्य शरीर के लिये बोकर आत्मा की कटनी नहीं काट सकता। परन्तु परमेश्वर का वचन कहता है, कि उसकी दृष्टि में प्रत्येक मनुष्य पापी है, और यदि मनुष्य अपने जीवन के रहते परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा उसके बताए मार्ग अनुसार नहीं कर लेता, तो वह अपने ही पापों में मरेगा। (यहेजकेल 18:20-24) सो हम देखते है कि मनुष्य की आत्मा असुरक्षित है। इसलिये यदि मनुष्य सुरक्षा के महत्व को समझता है; यदि मनुष्य सुरक्षा की आवश्यकता का अनुभव करता है, तो उसे चाहिए कि सबसे पहिले वह इस प्रश्न पर विचार करे कि क्या मेरी आत्मा सुरक्षित है? यदि आज मैं अपने इस शरीर को छोड़कर जगत से चला जाऊं तो मेरी आत्मा का क्या होगा? क्या मैं स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाऊंगा या अपने पाप के कारण उस नरक में प्रवेश करूंगा जहां से कभी कोई छुटकारा नहीं होगा?

मित्रो, यह प्रश्न बड़ा ही गंभीर है, बड़ा ही आवश्यक है, और बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है, कि क्या मेरी आत्मा सुरक्षित है? क्या मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि मेरा उद्धार हो चुका है? क्या मैं किसी भी समय स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये तैयार हूं? परन्तु मैं यह कैसे जान सकता हूं? कोई मनुष्य मुझे इस बात का निश्चय नहीं दिला सकता। केवल परमेश्वर, ही मुझे बता सकता है, कि उसने मेरे सब पाप क्षमा कर दिये है। केवल उसी का वचन मुझे मेरे उद्धार का निश्चय दिला सकता है।

पवित्र बाइबल के द्वारा परमेश्वर, मित्रो, हम से यों कहता है कि अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। (रोमियों 8:1) यानि जो अब यीशु मसीह में हैं, वे अपने पाप के कारण परमेश्वर से दूर रहने का दंड नहीं पाएंगे क्योंकि परमेश्वर का पुत्र

यीशु मसीह उसकी इच्छा से हमारे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत में प्रत्येक मनुष्य से ऐसा प्रेम रखा कि उसने उन्हें बचाने के लिये उनके स्थान पर अपने ही पुत्र यीशु को क्रूस के ऊपर दण्ड दिलवाया, और उसकी मृत्यु को जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया। इसलिये जो मनुष्य परमेश्वर के पुत्र मसीह में है, परमेश्वर उसे अपने से दूर रहने का दण्ड नहीं देता। क्योंकि मसीह में होने का अर्थ है पापों से छुटकारा प्राप्त करना। क्योंकि जिस पाप के लिये मुझे दण्ड मिलना था मसीह ने उस दण्ड को मेरे स्थान पर क्रूस के ऊपर स्वयं अपने ऊपर उठा लिया। इसका अर्थ यह है, कि यदि आज आप अपनी आत्मा की सुरक्षा चाहते है, तो वह आप को परमेश्वर के पुत्र मसीह में मिल सकती है, जो परमेश्वर की दृष्टि में हम सबके पापों का छुटकरा और प्रायश्चित है।

प्रभु यीशु का कथन है, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, यदि कोई परमेश्वर के पास पहुंचना चाहता है, तो वह केवल मेरे द्वारा ही पहुंच सकता है (यूहन्ना 14:6), और उसने कहा है, कि जो मुझ में विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:16)। गलतियों की पुस्तक के तीसरे अध्याय में पवित्र बाइबल में लिखा है, क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। (गलतियों 3:26, 27)। सो परमेश्वर के वचन के अनुसार, जब हम मसीह यीशु में विश्वास लाते हैं। और बपतिस्मा लेते हैं तो हम प्रभु यीशु के भीतर अपने पापों से उद्धार पाते हैं। और जब हम ऐसा करते है तो हमें इस बात का निश्चय होता है कि हमने अपने पापों से उद्धार पा लिया है। क्योंकि परमेश्वर ने कहा है और हमने उसकी आज्ञा को माना है। हमारे उद्धार का निश्चय, न तो मनुष्यों की शिक्षाएं हैं और न हमारा कोई अनुभव, परन्तु परमेश्वर का वचन है। क्या आप ने उसकी आज्ञा को मानकर अपने जीवन को सुरक्षित कर लिया है?

कलीसिया की पहचान

जे. सी. चोट

यदि आपका कोई मित्र बहुत समय से खोया हुआ हो तो उसका पता लगाने के लिये आप क्या करेंगे? स्वभावत: उसे ढूंढ़ने से पहले आप उसकी पहचान के सब चिन्हों को एकत्रित करेंगे व फिर उसे ढूंढ़ना आरंभ करेंगे। मिल जाने पर केवल उसी व्यक्ति को जो पहचान के सभी चिन्हों से समानता रखता होगा, आप स्वीकार करेंगे अर्थात् जिसकी खोज आप कर रहे थे। इसी रीति से, संसार में बहुत सी कलीसियाएं हैं। कोई व्यक्ति यह किस प्रकार से जान सकता है कि कौन सी कलीसिया सही, व सच्ची है? कोई व्यक्ति कैसे जान सकता है कि मसीह की कलीसिया कौन सी है? वस्तुत: आप पहचान के सब चिन्हों को एकत्रित करें और

तब विभिन्न कलीसियाओं को उन से मिलाएं। जब आप उस एक कलीसिया का पता लगा लें जो पहचान के प्रत्येक चिन्ह से समानता रखती है, केवल तभी आप विश्वास के साथ कह सकेंगे कि आप को सही व सच्ची कलीसिया मिल गई है। परन्तु पहचान के चिन्ह क्या है? वे कहां मिल सकते हैं? इसका उत्तर हमें बाइबल में से मिलता है।

कलीसिया की पहचान के सभी सही चिन्ह बाइबल में मिलते है। इसलिये, इसके विषय में हम उसमें देख लें कि वे क्या हैं:

1. **मसीह ने कलीसिया को बनाया।** "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा : और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)।
2. **इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ।** यह लूका 24:45-49 और प्रेरितों 2 अध्याय से स्पष्ट है।
3. **इसकी स्थापना लगभग 33 ई. स. में हुई,** पिन्तेकुस्त के दिन और इसका ज्ञान भी प्रेरितों 2 अध्याय से होता है।
4. **कलीसिया ने मसीह का नाम धारण किया।** अनेक मंडलियों का उल्लेख करते हुए, पौलुस ने लिखा, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)। तथा कुरिन्थुस में कलीसिया से उसने कहा, "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।" (1 कुरिन्थियों 12:27)। परन्तु देह क्या है? कलीसिया। (इफिसियों 1:22, 23)।
5. **इसके सदस्य मसीही कहलाए।** "और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।" (प्रेरितों 11:26)। "तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?" (प्रेरितों 26:28)। "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" (1 पतरस 4:16)। अत: स्मरण रहे, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:12)।
6. **केवल मसीह ही इसका सिर है।** "और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" (कुलुस्सियों 1:18)।
7. **केवल एक ही है।** "एक ही देह है, और एक आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।" (इफिसियों 4:4)। किन्तु देह क्या है? यह कलीसिया है। (कुलुस्सियों 1:18)। इसलिये, जबकि एक ही देह है, और देह कलीसिया है, तब केवल एक ही कलीसिया है।
8. **कलीसिया में प्रवेश पाने के कुछ विशेष नियम है।** अर्थात् विश्वास (इब्रानियों 11:6), मन फिराना (प्रेरितों 17:30), विश्वास का अंगीकार करना (रोमियों 10, 9, 10), और बपतिस्मा। (मरकुस 16:16)। जिस व्यक्ति का उद्धार होता

है उसे प्रभु यीशु कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों 2:47)। इसी प्रकार से रोमियों 6:3, 4 व गलातियों 3:26, 27 और 1 कुरिन्थियों 12:13 से भी यही शिक्षा मिलती है कि विश्वासी जन मसीह और उसकी कलीसिया में एक होने के लिये बपतिस्मा लेते है। इन आज्ञाओं को मानने के द्वारा मनुष्य का जन्म कलीसिया अर्थात् राज्य में होता है। (यूहन्ना 3:3-5)।

9. **कलीसिया की उपासना विशेष है।** सब मसीही सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होते हैं (प्रेरितों 20:7), गाने के लिये (इफिसियों 5:19), प्रार्थना करने के लिये (प्रेरितों 2:42), परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिये (2 तीमुथियुस 2:15), प्रभु भोज में भाग लेने के लिये (1 कुरिन्थियों 11), और चंदा देने के लिये (1 कुरिन्थियों 16:2)।

10. **कलीसिया की शिक्षा केवल बाइबल पर ही आधारित है।** किसी को भी यह अधिकार नहीं दिया गया कि वह बाइबल में कुछ भी बढ़ाए, या उसमें से कुछ भी निकाले या उसे बदले। (प्रकाशितवाक्य 22: 18, 19; गलतियों 1: 6-11)। केवल बाइबल ही कलीसिया का एकमात्र धर्मसार है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी पुस्तकें व धर्मसार अस्वीकृत है।

11. **कलीसिया का संगठन निश्चय ही परमेश्वर की कही गई योजना के अनुसार होना चाहिए।** मसीह कलीसिया का सिर है (इफिसियों 5:23) और प्रत्येक मंडली में उसके अपने अध्यक्ष व सेवक होने चाहिए। (1 तीमुथियुस और 3 तीतुस 1)। पृथ्वी पर प्रभु की कलीसिया का न तो कोई प्रधान है न कोई प्रधान कार्यालय और न ही इसका कोई राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मनुष्य द्वारा बनाया हुआ संगठन है।

12. **कलीसिया का उद्देश्य तीन प्रकार के कार्य करना है।** अर्थात् सुसमाचार प्रचार करना (मरकुस 16:15, 16), दीनों की सहायता करना (गलातियों 6; याकूब 2), और सदस्यों की आत्मिक उन्नति के लिये कार्य करना (इब्रानियों 3:12-14)।

13. **प्रत्येक मसीही को चाहिए कि वह भक्तिपूर्ण मसीही जीवन निर्वाह करे।** वह संसार से प्रेम नहीं कर सकता (1 यूहन्ना 2:15; याकूब 4:4), इसके विपरीत उसमें आत्मिक फल होने चाहिए (गलातियों 5:22, 23)। जीवन का मुकुट केवल वही प्राप्त करेगा जो प्राण देने तक विश्वासी रहेगा (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

कलीसिया की पहचान के यह कुछ चिन्ह हैं। इन के विषय में हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए आदर्श अर्थात् बाइबल से ज्ञात होता है। अब, जिस कलीसिया के सदस्य आप है उसकी तुलना इनसे कीजिए। उदाहरणार्थ, आरंभ के चार चिन्हों को ले लें। अपने आप से पूछें, जिस कलीसिया में मैं हूं "उसे किस ने बनाया?" क्या उसे मसीह ने स्थापित किया या किसी मनुष्य ने? तब पूछें, "इस कलीसिया की स्थापना कहां पर हुई थी?" क्या इसका आरंभ यरूशलेम में हुआ था या किसी अन्य स्थान पर? फिर पूछें, "इस

कलीसिया की स्थापना कब हुई थी?" यदि इसकी स्थापना 33 ई. स. के बाद में हुई है तब यह प्रभु की कलीसिया नहीं हो सकती। और अंत में, स्वयं से पूछें, "इस कलीसिया का नाम क्या है?" यदि यह मसीह का नाम भी अपने ऊपर नहीं रखती, तब यह मसीह की कैसे हो सकती है? इसी प्रकार के अन्य प्रश्न भी आप पूछ सकते हैं, परन्तु यह निर्णय करने के लिये कि जिस कलीसिया में आप है वह प्रभु की है या किसी मनुष्य की यही पर्याप्त है। इसी प्रकार से अन्य कलीसियाओं की तुलना भी आप इन पहचान के चिन्हों से कर सकते हैं, यह निश्चय करने के लिये कि वे परमेश्वर की है या मनुष्यों की। मेरा विश्वास है कि आप अंतर देख सकेंगे यदि आप अपने आप से ईमानदार है।

यदि आप जान लेते हैं कि जिस कलीसिया के आप सदस्य है वह बाइबल की एक व सच्ची कलीसिया नहीं है; तब आप से मेरा यह आग्रह है कि आप उसे त्याग दें, सत्य को सीखें, उसे मानें, ताकि प्रभु आपको उस कलीसिया में मिलाए जिसके विषय में आप परमेश्वर के वचन में पढ़ते हैं। तब आप उस एक कलीसिया के सदस्य होंगे जिसमें सब उद्धार पाए हुए मिलाए जाते हैं।

इस जगत में आने से पहले वह परमेश्वरत्व में उसके साथ विद्यमान था

बेटी बर्टन चोट

यीशु मसीह के व्यक्तित्व और अधिकार के विषय में सही जानकारी प्राप्त करने के लिये हमें यह समझना उसके बारे में बड़ा ही आवश्यक है, कि वास्तव में यीशु मसीह कौन है? पृथ्वी पर आने से पहले वह कहां था? और वह कब से है?

कुछ लोगों का विचार है, कि यीशु के जीवन का आरंभ उस समय हुआ था जब वह इस पृथ्वी पर जन्म लेकर आया था, और उसने एक अच्छा जीवन निर्वाह किया था, वह परमेश्वर की सभी आज्ञाओं को मानता था, और इसलिये परमेश्वर ने उसे सभी अन्य मनुष्यों में सबसे महान् मानकर उसे अपना पुत्र होने का अधिकार दिया था।

कुछ अन्य लोग ऐसा मानते हैं, कि यीशु आरंभ से ही एक पुत्र के रूप में परमेश्वर के साथ विद्यमान था। उनका ऐसा मत है, कि परमेश्वर का वही पुत्र जो सदा से ही उसके साथ पुत्र के रूप में वर्तमान था, मनुष्य का रूप धारण करके पृथ्वी पर आ गया था।

संसार में अनेकों ऐसे लोग भी हैं जो ऐसा मानते हैं कि समय-समय पर परमेश्वर किसी न किसी रूप में पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच में प्रकट हुआ है, अर्थात् वह एक मनुष्य बनकर किसी भविष्यवक्ता के रूप में या कोई अवतार लेकर जगत में समय-समय पर आया है। और यीशु को भी वे इसी तरह से देखते हैं, अर्थात् वे मानते हैं कि वह भी अनेकों अन्य अवतारों में से एक था जिसे परमेश्वर ने लोगों का मार्ग-दर्शन करने के लिए संसार में भेजा था।

इस विषय पर लोगों के अलग-अलग विचार और मत हो सकते हैं। क्योंकि लोगों की धारणाएं अन्य लोगों के मतों और विचारों पर ही आधारित होती हैं। परन्तु यदि हम वास्तव में केवल सच्चाई ही जानना चाहते हैं यीशु मसीह के बारे में, तो ज़रूरी है कि हम उस एक-मात्र स्रोत के पास जाएं, जिसके द्वारा ही हमें यीशु के बारे में सही जानकारी मिल सकती है- और वह एकमात्र सही और उचित स्रोत है: बाइबल। सो, बाइबल के अनुसार, यीशु कौन है? वह पृथ्वी पर कहां से आया था?

यूहन्ना 1:1-3 में बाइबल में हमारा ध्यान जगत की उत्पत्ति पर दिलाया गया है, अर्थात् यह बताया गया है, कि जगत की सृष्टि के समय परमेश्वरत्व किस रूप में आदि से वर्तमान था, लिखा है:

''आदि में (जैसा कि उत्पत्ति 1:1 में हम पढ़ते हैं, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की थी)। वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।''

इब्रानियों 1:2 में उसी वचन का वर्णन करके इस प्रकार कहा गया है:

''उसी के द्वारा उसने (परमेश्वर ने) सारी सृष्टि की रचना की है।''

और कुलुस्सियों 1:15-17 में उसी वचन के विषय में यूं लिखा है:

''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।''

बाइबल में लिखे ये शब्द हमारा ध्यान विशेष रुप से परमेश्वरत्व में उपस्थित उस एक व्यक्तित्व पर दिलाते हैं जिसे 'वचन' कहकर सम्बोधित किया गया है। और यहां हम ऐसा बिल्कुल नहीं पाते कि उसे एक पुत्र के रूप में दर्शाया गया है। परन्तु इसके विपरीत, उसे परमेश्वरत्व में एक समान परमेश्वर के तुल्य दर्शाया गया है।

वचन

वचन परमेश्वर था। वचन परमेश्वर के साथ था, और वह, परमेश्वर, परमेश्वर के साथ था। उसमें (वचन में) जीवन था- जीवन उसे किसी अन्य स्रोत सें नहीं प्राप्त हुआ था, परन्तु स्वयं उसी में था। अर्थात् वह स्वयं ही परमेश्वर था और जीवन का स्रोत था।

उसी वचन को यहां इस प्रकार दर्शाया गया है, जिसके द्वारा और जिसके लिये जगत की सारी वस्तुओं की रचना की गई थी।

उसी का वर्णन करके कहा गया है कि, ''वह अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है'' और ''वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है।'' (इब्रानियों 1:3)।

सामान्य रूप से जो लोग पुराने नियम को और नए नियम को पढ़ते हैं उनको कदाचित यही प्रतीत होता है, कि पुराने नियम में विशेष रूप से परमेश्वर पर ध्यान दिलाया गया है और नया नियम विशेष रूप से हमें परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बारे

में ही बताता है। परन्तु इस विषय पर गम्भीरता के साथ अध्ययन करने के बाद हमें वास्तव में कुछ और ही मिलता है।

एल और एलोहिम

बाइबल का पुराना नियम सर्वप्रथम इब्रानी भाषा में लिखा गया था, और इब्रानी भाषा में 'परमेश्वर' शब्द का उच्चारण अधिकांश रूप में बहु-वचन में हुआ है। जबकि परमेश्वर के लिये इब्रानी भाषा के शब्द 'एल' को, जो कि एक-वचन है, पुराने नियम में लगभग 500 बार उपयोग में लाया गया है। दूसरी ओर 'एलोहिम' शब्द, जो कि बहु-वचन है, और जिसका तात्पर्य 'परमेश्वरत्व' से है, लगभग 3000 बार इस्तेमाल हुआ है। इसका अर्थ यह है, कि जब हम बाइबल में 'परमेश्वर' के बारे में पढ़ते हैं, किसी भी अन्य भाषा में, तो जबकि हम परमेश्वर को एक ही वचन में देखते हैं, दूसरी ओर, बाइबल में हम 'परमेश्वरत्व' के बारे में, जो कि वास्तव में बहु-वचन है, पढ़ रहे हैं, अर्थात् पिता परमेश्वर और वचन और पवित्र आत्मा। निम्नलिखित उदाहरणों को देखें:

''आदि में परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) ने आकाश और पृथ्वी की रचना की'' (उत्पत्ति 1:1)।

''फिर परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) ने कहा, हम (बहु-वचन) मनुष्य को अपने (बहु-वचन) स्वरूप के अनुसार अपनी (बहु-वचन) समानता में बनाएं'' (उत्पत्ति 1:26)।

''फिर यहोवा परमेश्वर (बहु-वचन) ने कहा, 'मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से (बहु-वचन) एक के समान हो गया है।'' (उत्पत्ति 3:22)।

''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) है, यहोवा एक ही है।'' (व्यवस्थाविवरण 6:4)। (अर्थात, परमेश्वरतत्व में एक से अधिक व्यक्तित्व होते हुए भी वास्तव में परमेश्वर केवल एक ही है।)

''यहोवा, जो इस्राएल का राजा है, अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यों कहता है, ''मैं सब से पहला हूं, और मैं ही सदा रहूंगा, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) है ही नहीं।'' (यशायाह 44:6)।

''क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) हूं, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्त्ता हूं।'' (यशायाह 43:3)।

सो बाइबल में से पढ़कर हमें यह सीखने को मिलता है कि पुराने नियम में जहां कहीं भी परमेश्वर के बारे में हम पढ़ते हैं, तो अधिकांश रूप से वहां परमेश्वरत्व का वर्णन हुआ है। किन्तु, इस पुस्तक में विशेष रूप से हम परमेश्वरत्व में के उस व्यक्तित्व पर ध्यान दे रहे हैं, जिसे 'वचन' कहकर सम्बोधित किया गया है। उसी वचन के बारे में यूहन्ना 1:1 से पढ़कर हमने देखा था कि लिखा है, कि वह परमेश्वर था और वही परमेश्वर के साथ था। हमने परमेश्वरत्व के बारे में भी बाइबल से देखा है, जिसका अर्थ है, एक ही परमेश्वरत्व में एक से अधिक व्यक्तियों का विद्यमान होना, अर्थात् पिता, और पवित्रात्मा एक परमेश्वर है। 'वचन' का ईश्वरत्व में विद्यमान होने का तात्पर्य यह है कि वह स्वयं भी उसी तरह से परमेश्वर है, जिस प्रकार से पिता और पवित्र-परमेश्वर हैं;

उसमें जीवन है, वह सर्व शक्तिमान है, वह सर्व-वर्तमान है, और सर्व-ज्ञानी तथा सर्व-सिद्ध है। अर्थात् परमेश्वरत्व में प्रत्येक व्यक्तित्व स्वयं अपने आप में ही सम्पूर्ण है, और एक समान है।

फिर हम वचन के बारे में यूं पढ़ते हैं कि वही वचन जो परमेश्वर के साथ था और परमेश्वर था, वही वचन एक मनुष्य के रुप में पृथ्वी पर आया था। लिखा है यूहन्ना 1:14 में: ''और वचन देहधारी हुआ।''

इस प्रकार अब हमारा परिचय यीशु मसीह से होता है। परन्तु उस 'पिता के एकलौते' (यहून्ना 1:14) पर और अधिक देखने से पहले, हमें इन शब्दों पर भी ध्यान देना ज़रूरी है, ''आदि में'' और ''वचन देहधारी हुआ।'' परन्तु इससे पहले वह स्वर्ग में था। सो पुराने नियम के समय में उसका कार्य क्या था?

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

आपने यह भी कहते कुछ लोगों को सुना होगा कि मनुष्य के उद्धार से कलीसिया का कुछ संबंध नहीं है। यह सच है कि मनुष्य का उद्धार कलीसिया नहीं परन्तु परमेश्वर ही करेगा। किन्तु प्रश्न इस बात का है कि क्या परमेश्वर उन लोगों का भी उद्धार करेगा जो उसकी कलीसिया में नहीं हैं जिसे मसीह ने बनाया था? बाइबल इस विषय में क्या कहती है?

अपनी कलीसिया के साथ मसीह का संबंध इस बात का सबूत है कि उसकी कलीसिया बड़ी ही महत्वपूर्ण है। पौलुस इफिसियों 5:25 में लिखकर कहता है, हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके उसके लिये अपने आप को दे दिया। ऐसे ही प्रेरितों 20:28 में हम यूं पढ़ते हैं कि, परमेश्वर की कलीसिया जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया। अब फिलिप्पियों 2:5 में लिखी इस बात को भी स्मरण रखें कि जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। हमें कलीसिया से वैसा ही प्रेम रखना चाहिए जैसा कि मसीह का था। यदि कलीसिया को मोल लेने के लिये मसीह ने अपने आप को दे दिया, तो फिर इसका अर्थ यह है कि उद्धार पाने के लिए हम सब को उसकी कलीसिया में होना चाहिए।

इसी प्रकार हम यह भी देखते हैं, कि जो व्यक्ति मसीह की कलीसिया में नहीं है वह मसीह में भी नहीं है। कलीसिया मसीह की देह है और वह उसका सिर है। पौलुस कुलुस्सियों 1:18 में कहता है कि वही देह अर्थात कलीसिया का सिर है। उसी देह के सब मसीही अंग हैं। 1 कुरिन्थियों 12:27 में लेखक कहता है, इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो। जिसका संबंध देह के साथ नहीं है उसका संबंध सिर के साथ भी नहीं हो सकता। सो मसीह में आने के लिये मनुष्य को क्या करना चाहिए? गलतियों 3:27 में पौलुस कहता है, तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है। मसीह में आने के लिये बपतिस्मा

लिया जाता है। इफिसियों 1:3 में कही गई इस बात पर भी ध्यान दें, जहां लिखा हैं, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। सब प्रकार की आशीष मसीह में है और मसीह में होने का अभिप्राय मसीह की देह अर्थात उसकी कलीसिया में होने से है।

क्योंकि हम सब का न्याय होगा (रोमियों 14:10ख-13क)

डेविड रोपर

सबका न्याय होगा (आयतें 10ख, 11): यह हमें चौथे कारण पर ले आता है कि हमें एक दूसरे पर दोष क्यों नहीं लगाना चाहिए। यह कारण है कि क्योंकि हम सब का न्याय प्रभु करेगा। इस तथ्य का संकेत कि हमारा न्याय परमेश्वर द्वारा किया जाएगा, आयत 4 में मिला था। इसे स्पष्ट बताया गया है, हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे (आयत 10ख)।

न्याय सिंहासन जिसका अर्थ खुली हवा, ऊंचा मंच, जिसके सामने दोषी लोग खड़े हो। कैदियों के सामने खड़ा किया जाता था जो पौलुस के समय में एक आम बात होगी। मैं जब पुराने कुरिन्थुस में गया तो मैंने देखा जिसे पुनः निर्मित किया गया था। इसके सामने बीच में एक छोटे खंम्भे वाला खुला क्षेत्र था, जहां आरोपी खड़े होते थे।

जैसे पौलुस के समय में रोमी कचहरियों में लोग खड़े होते थे, वैसे ही आप और मैं अपना सनातन दण्ड पाने के लिए परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे। अन्त में हम खत्म होने जा रहे हैं, न्याय के स्थान के साथ-साथ, परमेश्वर के सामने।

इस बात के प्रमाण के लिए कि ऐसा ही होगा पौलुस ने यशायाह 45:23 से उद्धृत किया क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगंध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर का अंगीकार करेगी (आयत 11)। यशायाह 45 वह वचन है, जिसमें परमेश्वर सृष्टि और छुटकारे में मूर्तियों के व्यर्थ नकारेपन के साथ अपनी वास्तविकता और सामर्थ में भिन्नता करता है। इस वचन में संकेत है कि एक समय आएगा जब हर कोई यहोवा को एक सच्चे परमेश्वर के रूप में मान लेगा। यह तब होगा जब न्याय के दिन हम उसके सामने खड़े होंगे।

हम में से हर किसी को परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने एक दिन पेश होना है तो फिर हमारे लिए एक दूसरे का न्याय कितना गलत है। सामने की न्याय की प्रतीक्षा करते हुए खड़े कैदियों की कतार की कल्पना करें। अचानक उनमें से एक उस समूह में से भागकर ऊपर चढ़ जाता है। वह चिल्लता है अब मैं जज हूं। कितना मूर्ख व्यक्ति है। सिपाहियों द्वारा उसे नीचे उतारकर अपनी जगह खड़ा करने पर उसे समझ आ जाएगा कि दूसरों का न्याय करने का काम उसका नहीं है।

हर किसी को अपने काम का हिसाब देना होगा (रोमियों 12,13क): पौलुस ने कहा, सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा (आयत 12)। मुझे आपका हिसाब नहीं देना पड़ेगा और न आपको मेरा हिसाब देना पड़ेगा। हम में से हर किसी को परमेश्वर को अपना ही लेखा देना होगा।

जी उठने के बाद यीशु तिबरियुस (गलील) के पास अपने चेलों को दिखाई दिया (यूहन्ना 21)। यीशु ने इस अवसर का इस्तेमाल पतरस से बात करने के लिए किया, जिसने उसका इंकार किया था। बातचीत के अन्त में पतरस ने यीशु से यूहन्ना के विषय में पूछा, जो पास ही खड़ा था, हे प्रभु इसका क्या हाल होगा? (आयत 21) यीशु ने उत्तर दिया, तुझे इससे क्या? तू मेरे पीछे हो ले। (आयत 22)। अन्य शब्दों में दूसरों की चिंता छोड़ और मेरे साथ अपने संबंध की चिंता करना आरंभ कर। रोमियों 14:12 को इस प्रकार लिखा गया है, तुझे अपने पूरे हाथ दिए गए हैं कि परमेश्वर के सामने अपने जीवन की देखभाल करें।

पौलुस ने कहा, सो आगे को हम एक-दूसरे पर दोष न लगाएं (आयत 13)। पहिले अपने जीवन की जांच करें।

सलाम (कुलुस्सियों 1:1, 2)

ऑवन डी. आल्ब्रट

पौलुस और तीमुथियुस की ओर से (1:1)

पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से।

पौलुस (1:1) पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम अपने पत्र की पहचान प्रेरिताई के अधिकार के साथ लेखक के रूप में करवाई। उसने तीमुथियुस को अपना सहकर्मी और मसीह में भाई बताया। उसके बाद वह मसीह में अपने कुलुस्सी भाइयों को सम्बोधित करने और परमेश्वर की ओर से उनके लिए इच्छा करने के लिए आगे बढ़ा पौलुस के तेरह पत्रों का आरंभ उसके नाम के साथ होता है।

इस पत्र का आरंभ पौलुस के साथ करके उसने अपने समय में पाए जाने वाले सलाम का ढंग अपनाया। आमतौर पर वह अपने नाम और कई बार अपने साथ के व्यक्ति या व्यक्तियों के नाम के साथ प्राप्तकर्ताओं का हवाला देते हुए सलाम लिखता था।

प्रेरितों के काम की पुस्तक इस प्रेरित को शाऊल और पौलुस दो नामों से दिखाती है (प्रेरितों 13:9)। वह यहूदियों में था तब स्पष्टता उसे उसके इब्रानी नाम शाऊल से जाना जाता था। परमेश्वर से मांगा गया। इसका यूनानी सामानांतर शब्द सालूस है। पौलुस जब अन्य जाति संसार में प्रचार करने लगा तो लूका उसके यूनानी नाम पौलुस का इस्तेमाल करने लगा, जिसका अर्थ है, नन्हा या छोटा। अपने पत्रों में उसने अपने आपको पौलुस बताया (उदाहरण के लिए रोमियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:1)। 2 पतरस 3:15 में पतरस ने उसे पौलुस कहा जो

कि प्रेरितों के काम और पौलुस के पत्रों के बाहर नये नियम में उसके नाम का एकमात्र उल्लेख है।

दमिश्क के मार्ग पर अपने अनुभव को याद करते हुए (प्रेरितों 22:7; 26:14), पौलुस ने यीशु द्वारा उसे शाऊल, कहने को दोहराया। अन्य मामलों में उसने अपने आपको पौलुस कहा। अपने पत्रों में उसने शाऊल का इस्तेमाल कभी नहीं किया, शायद इसलिए क्योंकि वे अन्य जाति संसार को लिखे गए थे या तीमुथियुस तीतुस और फिलेमोन जैसे लोगों की अन्य जाति पृष्ठभूमि के कारण।

कुछ लोगों का दावा है कि मसीही बनने पर उसका नाम शाऊल से पौलुस रखा गया था। शायद यह सही नहीं है। लूका उसके मन परिवर्तन से बारह सालों तक उसे शाऊल ही कहता रहा है (प्रेरितों 7:58; 8:1-3; 9:1-22; 11:25-30; 13:1, 2)। पौलुस के रूप में उसके नाम का पहली बार उल्लेख उसकी पहली मिशनरी यात्रा के समय साइप्रस नामक टापू पर पआफुस का सामना करने के विवरण में मिलता है। लूका ने लिखा है, तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है (प्रेरितों 13:9)। लूका ने यह नहीं लिखा कि उसका नाम शाऊल से बदलकर पौलुस रख दिया गया था। प्रेरित को संभवतया आरम्भ से ही शाऊल और पौलुस दोनों नाम मिले थे। इब्रानी नाम और यूनानी नाम दोनों इकट्ठे होना कोई असामान्य बात नहीं होगी।

न केवल प्रेरितों के काम (अध्याय 13-28) बल्कि उसके पत्रों से भी, किसी भी अन्य प्रेरित से अधिक पौलुस के बारे में पता चलता है। दमिश्क में अपने मन परिवर्तन के बाद वह तुरन्त दमिश्क में और फिर यरूशलेम में प्रचार करने लगा (प्रेरितों 9:19-22, 26-28)। यहूदियों द्वारा उसे जान से मारने की धमकी के कारण उसे तरतुस में भेज दिया गया था (प्रेरितों 9:29, 30)। बरनबास द्वारा उसे तरसुस से अन्ताकिया में लाए जाने तक वह गुमनाम ही रहा (प्रेरितों 11:22-26; देखें गलातियों 1:22)। इसके बाद उसने तीन मिशनरी यात्राएं कीं (प्रेरितों 13:1-21:15)।

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में पौलुस को यरूशलेम में पहचान लिया गया। यहूदी उसे मार डालने की तलाश में थे, परन्तु रोमी सेनापति ने उसे बचा लिया (प्रेरितों 21:26-39)। वहां से उसे कैसरिया में भेज दिया गया और फेलिक्स द्वारा फिर फेस्तुत और अग्रिप्पा द्वारा मुकदमा चलाया गया (प्रेरितों 23-27)। रोमी नागरिक होने के कारण उसने रोम में कैसर द्वारा मुकद्मा चलाए जाने की अपील की, जहां वह दो साल तक भाड़े के घर में रहा और सुसमाचार सुनाता रहा (प्रेरितों 28:30)।

उसके जीवन की बाद की घटनाएं तीमुथियुस और तीतुस के नाम उसके पत्रों और बाइबल से बाहर की परम्परा से पता चल सकती है-

बहुत संभावना है कि पौलुस को ईस्वी 63 में छोड़ दिया गया और अपनी फिर से गिरफ्तारी और नीरो के हाथों मृत्यु से पहले वह स्पेन और इजियन क्षेत्र में गया (लगभग 67 ईस्वी में)। 1 कलेमेंट (5.5-7; ई. 95), म्युरेटोरियम कैनन (लगभग 170), और अपोक्रिफा (वरसिल्ली) ऐक्टस ऑफ पीटर (1.3; लगभग 200), स्पेन की एक यात्रा को गवाही देते है; और पासबानी की पत्रियां पूर्व में प्रेरितों के काम के बाद की सेवकाई को शामिल करती

हुई लगती है?

मुकदमा होने और छोड़े जाने के बाद शायद वह स्पेन में मिशन कार्य करने के लिए जाते हुए (रोमियों 15:24), मकिदुनिया में जाते हुए (1 तीमुथियुस 1:3), तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़ गया। इस यात्रा में वह क्रेते से होकर गया, जहां वह वहां पर काम को पूरा करने के लिए तीतुस को छोड़ गया (तीतुस 1:5)। फिर उसने जाड़े में निकुपुलिस में जाने की योजना बनाई (तीतुस 3:12)। स्पेन से वापस आने पर वह फिर से रोम में बंदी बना लिया गया होगा (2 तीमुथियुस 1:16, 17; 2:9)। अपने दूसरे मुकदमे में अपनी पहली पेशी के बाद उसे दोषी न पाए जाने के बावजूद गिरफ्तार कर लिया गया होगा (2 तीमुथियुस 4:16-18)। परन्तु उसे छूट जाने की कोई उम्मीद नहीं थी; उसे अपना अन्त निकट लग रहा था (2 तीमुथियुस 4:6-8)। परम्परा के अनुसार पौलुस का रोम के प्राचीन नगर के निकट एक ओस्टियन मार्ग पर सिर धड़ से अलग कर दिया गया। यदि रोमी नागरिक के रूप में उसे मृत्युदण्ड दिया जाता तो उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाना था, जैसे परम्परा बताती है कि पतरस को न केवल मारा गया था, बल्कि तलवार से उसका सिर धड़ से अलग किया गया होगा।

उसके तेरह पत्रों के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इन्हें न केवल आरंभिक कलीसिया द्वारा पढ़ा जाता था बल्कि बाद की सब पीढ़ियों द्वारा भी उनका विश्लेषण और अध्ययन किया गया है। इन पत्रों में कुछ समीही विचार और शिक्षा का आधार मिलता है। शायद जेल की उसकी पत्रियों ने उसकी मिशनरी यात्राओं से अधिक मसीहियत को प्रभावित किया है।

....प्रेरित है (1:1) है प्रेरित वाक्यांश को जोड़ने से तीन उद्देश्य पूरे होते हैं, पहचान कयोंकि पौलुस एक आम नाम था; प्रेरित के रूप में उसके अधिकार की पुष्टि; और निजी संबंध क्योंकि कुलुस्से के लोग उसके बारे में जानते थे। पत्र के किसी प्रेरित की ओर से होने का अर्थ था कि इसमें यीशु के अधिकार अन्य शास्त्रों के अधिकार की तरह ही (2 पतरस 3:15ख, 16)। यीशु का अधिकार था (1 कुरिन्थियों 14:37)। कुलुस्सियों का एक-एक शब्द परमेश्वर का प्रकाशन है। पौलुस को उसकी ओर से जिसने उसे भेजा था अधिकार और सामर्थ दी गई थी। वह केवल अपने व्यक्तिगत विचार व्यक्त नहीं कर रहा था; बल्कि वह अधिकारात्मक ढंग से, परमेश्वर की प्रेरणा से, यीशु के उस संदेश को लिख रहा था, जो सीधे प्रकाशन के द्वारा दिया गया था (1 कुरिन्थियों 14:37; गलातियों 1:11, 12)। कुलुस्सियों के लिए इस पत्र को इस प्रकार स्वीकार करना आवश्यक था जैसे यह उनके लिए मसीह का संदेश हो।

इस पत्र में पौलुस ने अपने आपको प्रेरित कहा, परन्तु अपने सब पत्रों में उसने प्रेरित होने की बात नहीं की।

....उन कलीसियाओं को लिखते हुए, जहां उसके अधिकार का दावा करना आवश्यक था, पौलुस प्रेरिताई के अपने कमीशन का दावा करता है, परन्तु फिलिप्पियों और थिस्सलुनीकियों के नाम अपने पत्र में, जो स्पष्टतया उसके मित्र और भरोसे योग्य थे, वह इसका उल्लेख नहीं करता है। इसी प्रकार से फिलेमोन के नाम व्यक्तिगत पत्र में जहां वह सहायता मांग रहा है,

अपने पद का इस्तेमाल नहीं करता। इसके विपरीत गलातिया की कलीसियाओं के नाम पत्र में जहां उसके अधिकार को चुनौती दी गई थी, प्रेरिताई की अपनी स्थिति का उसने बहुत मजबूत दावा किया है।

गलातियों के नाम पत्र में (गलातियों 1:1) पौलुस ने अपनी प्रेरिताई के मनुष्यों की ओर से नहीं, बल्कि परमेश्वर द्वारा दिए जाने का दावा किया। लगता है कि पौलुस ने कुरिन्थियों के नाम पत्र में अपनी प्रेरिताई का बचाव इसलिए किया, क्योंकि उन्होंने उसके प्रेरित होने पर सवाल उठाया था (1 कुरिन्थियों 9:1, 2; 15:9, 10; 2 कुरिन्थियों 11:5; 12:11, 12)। चाहे वह उन बारह में से एक नहीं, परन्तु वह अन्य प्रेरितों के बराबर का था और उसे बराबर अधिकार था।

प्रेरित यूनानी शब्द मूलतया, भेजा गया, का लिप्यंतरण है। नये नियम में इसका अर्थ भेजने वाले के नाम में, उसकी ओर से, और उसके अधिकार से काम करने के लिए दूत के रूप में हो गया। यीशु मसीह के प्रेरित उसकी आज्ञाएं सिखाने के लिए उसके द्वारा भेजे गए लोगों के रूप में अपना नहीं, बल्कि उसका प्रतिनिधित्व करते थे (मत्ती 28:20)।

सामान्यतया प्रेरित शब्द का इस्तेमाल अपने बहुत से चेलों में से यीशु द्वारा चुने गए छोटे समूह अर्थात उन बारह चेलों द्वारा किया जाता है (लूका 6:13)। इन लोगों को उसने अपने विशेष प्रतिनिधि बनाकर भेजा था। अपने अधिकार के आधार पर यीशु ने दूसरों के पास उसका प्रतिनिधत्व करते हुए अपना काम बढ़ाने के लिए उन्हें भेजा (मत्ती 10:1-5, 28:18-20)। जिन्होंने उन्हें ग्रहण किया, उन्होंने यीशु को ग्रहण किया (मत्ती 10:40)।

यहूदा यीशु से विश्वासघात करने और स्वयं मर जाने के बाद उसके स्थान पर मत्तियाह को चुना गया, जिससे वह उन बारह में से एक बन गया (प्रेरितों 1:16-26)। पौलुस जो अन्यजातियों का प्रेरित है (रोमियों 11:13)। उन बारह में से एक नहीं था। उसे बाद में अधूरे दिनों का जन्मा (1 कुरिन्थियों 15:8)।

पौलुस बेशक उन बारह में से नहीं था, परन्तु यीशु के प्रतिनिधि के रूप में उसके पास भी वही अधिकार था। नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं के साथ प्रेरित कलीसिया की नींव थे (इफिसियों 2:20)। उन्हें पवित्र आत्मा की सहायता के द्वारा यीशु मसीह के प्रकाशन मिला था (यूहन्ना 14:26; 16:13; इफिसियों 3:5), इस कारण उन्हें यीशु की शिक्षा के संबंध में अंतिम वचन पाने वालों के रूप में स्वीकार किया जाना आवश्यक था (2 पतरस 3:2)। आरंभिक कलीसिया प्रेरितों की शिक्षा, में बनी रही (प्रेरितों 2:42) क्योंकि यह उनके अधिकार का सम्मान करती थी।

प्रेरित, शब्द उनके लिए भी प्रासंगिक हो सकता है जिनके पास यीशु मसीह के बारह प्रेरितों का पद नहीं था। किसी भी दूत को जैसे बरनबास, जैसे अन्ताकिया से भेजा गया था, जिसे भी भेजा गया था (प्रेरितों 13:2-4) प्रेरित कहा जा सकता था (प्रेरितों 14:4, 14; देखें 2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25)। बरनबास अन्ताकिया की कलीसिया का प्रेरित था, परन्तु उन विशेष बारह प्रेरितों में से एक नहीं था। यह स्पष्ट है क्योंकि यरूशलेम में उसे उनसे अलग पहचाना जाता था (प्रेरितों 9:27)।

जब पौलुस मसीही लोगों को सताने के लिए दमिश्क को जा रहा था, तो यीशु ने उसे

दर्शन दिया। उसने इस दर्शन का कारण बताया, मैंने तुझे इसलिए दर्शन दिए हैं कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊं, जो तूने देखी हैं, और उनका भी, जिनके लिए मैं दर्शन दूंगा, (प्रेरितों 26:16)। इस दर्शन से यीशु का प्रेरित होने की एक पूर्व शर्त पूरी हुई (1 कुरिन्थियों 9:1, 2; 15:8)। कि उसने जी उठे को देखा है (प्रेरितों 1:21, 22; 2:32; 10:40, 41)। पौलुस ने यीशु द्वारा स्वयं चुना जाने और मनुष्य की ओर से नहीं बल्कि परमेश्वर द्वारा इस पद पर ठहराने की अन्य शर्तों को पूरा कर दिया (2 कुरिन्थियों 1:1; गलातियों 1:1; इफिसियों 1:1; 2 तीमुथियुस 1:1)।

पौलुस की प्रेरिताई की पुष्टि उसके द्वारा दिखाए गए चिन्हों, अचम्भों और आश्चर्य के कामों के द्वारा हुई थी (2 कुरिन्थियों 12:12; रोमियों 15:18, 19 भी देखें)। यह तथ्य कि कुरिन्थुस की कलीसिया को आश्चर्यकर्म करने के दान मिले थे इस बात का प्रमाण था कि वह प्रेरित है (1 कुरिन्थियों 12:8-11)। कुरिन्थिस की कलीसिया में पाए जाने वाले अन्य दानों की तरह आत्मा के दान प्रेरितों के हाथ रखने से दिए गए थे (प्रेरितों 8:17, 18; 19:6)। दमिश्क के मार्ग पर पौलुस को दर्शन देने के समय यीशु ने उससे कहा था कि नगर में जाए जहां उसे बताया जाएगा कि उसे क्या करना है (प्रेरितों 9:6)। यीशु द्वारा भेजे गए हनन्याह ने पौलुस से कहा, अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल (प्रेरितों 22:16)। पौलुस के पाप तब तक नहीं धोए गए थे जब तक उसने बपतिस्मा नहीं लिया था। इसके बाद उसने अन्य प्रेरितों में से किसी से भी बढ़कर परिश्रम किया था। (1 कुरिन्थियों 15:10)।

पूर्ण सत्य

एंसिल जेन्किंस

पिलातुस का सवाल था, सत्य क्या है? (यूहन्ना 18)। पिलातुस ने एक ऐसे सवाल को दोहराया था जिसे लोग सदियों से पूछते आ रहे हैं। दर्शन शास्त्र के अध्ययन का एक पहलू यह समझना है कि सत्य क्या है और मनुष्य इसे कैसे समझ सकता है। मसीही व्यक्ति के लिए यह प्रश्न कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं होनी चाहिए। बाइबल बताती है, परन्तु अब तुम मुझ जैसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिसने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना (यूहन्ना 8:40)। यीशु ने उत्तर दिया मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं (यूहन्ना 14:6)। सत्य के द्वारा इन्हें पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17)।

परमेश्वर, उसके पुत्र और उसके वचन में पाए जाने वाले सम्पूर्ण सत्य को स्वीकार करना मसीहियत के लिए कितना बुनियादी है।

यही युद्ध का मैदान है जिस पर हम सापेक्षवाद, उदारवाद और मानवतावाद नामक उसके शत्रुओं से लड़ते हैं। ये विचारधाराएं इस विचार को कि सच्चाई को जाना जा सकता है और यह अपरिवर्तनीय है और न तो मानती हैं और न मान सकती हैं।

दृढ़ सत्य की संभावना को कुछ लोगों द्वारा स्वीकार किए जाने के हाल के सर्वेक्षण को देखकर मुझे अधिक आश्चर्य नहीं हुआ। साधारण लोगों में से केवल उन्नीस प्रतिशत लोग

मजबूती से इसे मानते है। नया जन्म होने का दावा करने वालों में से यह संख्या केवल पच्चीस प्रतिशत अधिक बढ़ जाती है।

इन आंकड़ों से पता चलता है कि दुनियावीर लोगों के पास सुसमाचार को लेकर जाना क्यों कठिन है। जब दस में आठ लोगों का दृढ़ विश्वास नहीं है कि पूर्ण सत्य को जानना संभव है, तो हो सकता है कि वे बाइबल को नकार दें क्योंकि यह सत्य होने का दावा करती है। यदि बाइबल को सत्य के रूप में स्वीकारा नहीं जाता तो आदमी परमेश्वर के ज्ञान के एकमात्र स्रोत से अपने को दूर कर लेता है। इससे हमारी निजी शिक्षा को नये स्वरूप में ढाला जाना चाहिए। शिक्षा के दिए जाने से पहले हमारे लिये सत्य को स्वीकार किए जाने को मानना आवश्यक है।

फिर भी हमें पूर्ण सत्य को सीखने का अधिकार को भी मानना आवश्यक है। यदि हमारा इस में विश्वास नहीं है तो पूर्ण सत्य का प्रचार करने में हम अनुचित या अनुपयुक्त हो सकते हैं। आम लोगों के बजाय स्वयं को मसीही कहलाने वाले कितने लोग हैं जो पूर्ण सत्य में विश्वास रखते है। सर्वेक्षण के अनुसार केवल छह प्रतिशत यदि यह आंकड़े सही हैं तो इसका अर्थ यह है कि मसीही होने का दावा करने वाले सार में से तीन जन ऐसे हैं जिनका पूर्ण सत्य में पक्का विश्वास नहीं है। इस कारण बहुत सारी डिनोमिनेशनों के लोग यह दावा करेंगे कि किसी का क्या विश्वास है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। परमेश्वर पर विश्वास करना हर किसी की अपनी पसंद है और हर कोई अपने तरीके से विश्वास करता है। ऐसा निजी विश्वास किसी कलीसिया के प्रति वफादारी को बढ़ावा नहीं देता। सबसे दुख की बात आश्वासन की कमी है। यदि कुछ भी पूर्ण सत्य नहीं है तो क्या क्षमा वास्तविक है? क्या प्रार्थना का कोई असर होता है? क्या स्वर्ग है? जब तक कोई इन पूर्ण सत्यों को मानकर उन पर चलता नहीं है तब तक जीवन में सकून का कोई मतलब नहीं है।

हमें पूर्ण यानी परमेश्वर, मसीह, पवित्र आत्मा और बाइबल पर विश्वास करना आवश्यक है। इस विश्वास के आधार पर हमारे लिए उनके सामने अपने जीवन देना आवश्यक है। ऐसा समर्पण हमें जीवन बदलने वाले तरीकों से जीवन बिताने और काम करने में अगुआई देगा।

पौलुस की सेवकाई

अर्ल डी ऐड्वर्डस

थिस्सलुनीके में पौलुस का अपनी सेवकाई का बचाव (1 थिस्स. 2:1-12)
उसकी सेवकाई की सफलता (2:1-8)

हे भाइयो, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना व्यर्थ न हुआ, वरन तुम आप ही जानते हो कि पहले फिलिप्पी में दुःख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा साहस दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएं। क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से, और न छल के साथ है; पर जैसा

परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं, और इससे मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं। क्योंकि तुम जानते हो कि हम न तो कभी चापलूसी की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिये बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है, और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से। परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है; वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है; और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना-अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे प्रिय हो गए थे।

आयत 1: आना का यूनानी शब्द एइसोडोस, पौलूस थिस्सलुनीके में प्रचार के लिये मिलने आने को दर्शाता है। 1:9 में इसी शब्द का आने पर स्वागत अनुवाद किया गया है। पौलुस ने कहा कि उन भाइयों के पास उसका आना उनके लिये लाभ की बात थी। संभवत: पौलुस ने अपने आने पर उनके द्वारा स्वागत के संदेश से बढ़कर सुसमाचार के सामर्थ्य पर बल दिया, जिसका प्रचार उसने तब किया था, जब वह उनके पास आया था। वह सुसमाचार ही था जिसने उसके आने के उद्देश्य को पूरा किया। थिस्सलुनीके की कलीसिया भली-भांति जानती थी कि पौलुस का उनके पास आना व्यर्थ नहीं था। व्यर्थ शब्द का अनुवाद केनोस, से किया गया है जिसका अर्थ बिना उद्देश्य के या निष्फल होता है। एक बार फिर, उसने उन्हें भाइयों कहकर सम्बोधित किया।

आयत 1:5 के वाक्यांश में तुम जानते हो कि हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे, और तुम आप ही जानते हो थिस्सलुनीके नगर के झूठे शिक्षक कुछ लोगों को भरमा रहे थे कि पौलुस धन के लिये प्रचार करता था (जैसा कि बहुत से लोगों ने उस दिन किया)। पौलुस ने जिसका उत्तर उसने कहते हुए दिया कि तुम जानते हो कि जो ये कह रहे है हैं उसकी तुलना में मैं कैसे रहा और प्रचार किया। जिससे कि यह वर्णन सही हो, संभावना अच्छी हो, विशेषकर निम्नलिखित आयतों के दृष्टिकोण से इसके उद्देश्यों और चर्चा से पता चलता है कि पौलुस उनके साथ छल करने का प्रयास कर रहा था या नहीं।

आयत 2: थिस्सलुनीके नगर जाने से कुछ समय पहले, पौलुस ने फिलिप्पी में दु:ख उठाया और उपद्रव सहा (देखें प्रेरितों 16:16-40)। जिसमें बेंत से मारे जाने और बंदीगृह तथा भीतर की कोठरी में रखे जाने की बात थी (प्रेरितों, 16:23, 24)। फिर पौलुस ने कहा, वरन् तुम आप ही जानते हो, क्योंकि वह उन्हें इन सब बातों के बारे में बता चुका था, संभवत: तब जब वह उनके साथ था।

बीते समय में फिलिप्पी में दु:ख उठाने के हुए अनुभव के बाद भी, पौलुस और उसके सहकर्मियों ने परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार करने में साहस दिखाया (साहसी थे) देखें 1:5 पर चर्चा। साहस यूनानी शब्द पार्रेसिआजोमाई से लिया गया है जिसका अर्थ है खुलकर अपनी बात कहना। थिस्सलुनीके में पौलुस तथा दूसरे लोगों ने भी भारी विरोधों का सामना किया। विरोधाभास यूनानी शब्द अगोन से आता है। अगोन.... यूनानी खेलकूद प्रतियोगिता के लिये उपयोग किया जाता था। बाहरी क्लेश जैसे फिलिप्पियों 1:30 या आंतरिक चिंता जैसे कुलुस्सियों

2:1 में इसका उपयोग किया गया है। दिए गए संदर्भ में, पौलुस ने यहां पर बाहरी क्लेश पर अधिक जोर देते हुए किया था।

पौलुस ने इस प्रकार तर्क दिया, यदि वह और उसके सहकर्मी दृढ़ नहीं होते, तो वे इस क्लेश का सामना करने से पीछे हट चुके होते। क्योंकि उन्होंने प्रचार कार्य बंद नहीं किया, परिणाम यह है कि वे दृढ़ता के साथ आगे बढ़ रहे थे। वे केवल अपने परमेश्वर में साहस के द्वारा आगे बढ़ने में सक्षम थे। उसने इन सब बातों को उनके लिये संभव बनाया, जैसा वह हमारे लिये भी करता है (मत्ती 28:20;2 थिस्सलुनीकियों 3:16)।

आयत 3: थिस्सलुनीके में कुछ झूठे शिक्षकों के द्वारा पौलुस पर कई तरह के झूठे आरोप लगाए गए थे उसने उसका उत्तर देना शुरू किया (देखें चर्चा आयत 1 पर) ये शिक्षक भ्रम, अशुद्धता और छल के पाप में पाए जाते थे, इस कारण उन्होंने पौलुस पर भी वैसा ही आरोप लगा दिया।

उपदेश यूनानी शब्द पाराक्लेसिस से आता है, जिसका अनुवाद विनती किया गया है। यह शब्द क्रिया पाराकालेओ का संज्ञा रूप है जिसका अनुवाद 3:2 में प्रोत्साहित करना किया गया है यह थिस्सलुीके में पौलुस के द्वारा किये गए प्रचार के संदेश के विषय को बताता है। पौलुस ने कहा विशेष रूप से जो विनती हम करते है भ्रम या अशुद्धता या छल से अछूता रहे। गलत शिक्षा भ्रम के समान लगती है (2 थिस्सलुनीकियों 2:11)। इसके साथ ही, संभवत: वह नैतिक अशुद्धता के बारे में बता रहा था, जिस प्रकार अवैध यौन गतिविधियों को बहुत से पराए देवताओं के मंदिरों पाई जाती थी, जैसे कुरिन्थुस के अफ्रादिता के मंदिर में। यहूदी अकसर मसीहियों पर इस तरह की बातों से प्रेरित होने का दोष लगाते थे। पौलुस यह स्पष्ट करना चाहता था कि उसके संदेश में छल या कपट मिला हुआ नहीं है। छल शब्द डोलोस से आता है जिसका अर्थ चापलूसी तथा छल का प्रयोग करके लाभ उठाना होता है। घूम-घूम कर प्रचार करने वाले लोगों का इस प्रकार का चरित्र हुआ करता था, जो अपने श्रोतागणों से अपनी जीविका प्राप्त करते थे, जिस प्रकार आज के टेलीविजन पर प्रचार करने वाले जो बार-बार पैसों की मांग करते हैं।

पौलुस ने कहा, हमारा उद्देश्य ये नहीं है, और संकेत किया कि, तुम आप ही जानते हो कि यह सत्य है।

आयत 4. पौलुस और उसके सहकर्मियों ने वह नहीं किया था जो आरोप उन पर लगाए गए थे (आयत **3);** बल्कि उन्होंने परमेश्वर द्वारा योग्य ठहराए गए मनुष्यों के समान वर्णन (उचित कार्य) किया। योग्य ठहराए गए यूनानी शब्द की एक पुरानी क्रिया डोकिमाजो से आता है, जिसका अर्थ परीक्षा में डालना होता हैं जिस काल का उपयोग किया गया है वह पूर्ण अवस्था को बताता है, अर्थ है जांचा और परखा हुआ, ताकि वर्तमान समय में वे परमेश्वर के परखे दास के समान खड़े होकर उसके संदेश का प्रचार करें (देखें 1 शमूएल 16:7)। पौलुस का तात्पर्य यह था कि उसके कार्य और उसके संदेश को परीक्षा के द्वारा आज्ञा मिली है (देखें 5:21, जहां पर शब्द का अनुवाद परीक्षा किया गया है)। यह परीक्षा परमेश्वर के द्वारा थी, जो कोई गलती नहीं करता। पौलुस का उद्देश्य अशुद्धता से बिल्कुल दूर था।

परमेश्वर ने सुसमाचार संदेश का कार्य पौलुस और उसके जैसे दूसरे लोगों को सौंपा था

(देखें रोमियों 1:1)। वास्तव में, पौलुस पर छल द्वारा लाभ उठाए जाने का दोष कभी नहीं लगाया जा सकता था, क्योंकि उसने तो मनुष्यों को प्रसन्न करने का कभी प्रयास भी नहीं किया; जबकि उसने परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहा जो हमारे मनों को जांचता है (देखें यिर्मयाह 11:20)। पौलुस दूसरे मनुष्यों द्वारा उसके ऊपर लगाए गए दण्ड की आज्ञा को लेकर थोड़ा चिंतित था, परन्तु वह अपने परमेश्वर के सामने खड़े होने के लिये तैयार था (देखें 1 कुरिन्थियों 4:5)।

आयत 5. पौलुस ने इस बात का खण्डन किया कि वह और उसके सहकर्मी थिस्सलुनीकियों के साथ चापलूसी की बातें करते थे। चापलूसी झूठी प्रशंसा की बातें होती हैं, जिस पर उद्देश्यों की सार्थकता के लिये गंभीरता में विश्वास नहीं किया जाता था। कुछ प्रचारक अपने लाभ के लिये भाइयों को अपनी ओर करने या महान प्रचारकों के रूप में प्रशंसा पाने के लिये इस प्रकार किया करते थे। हम सभी को ध्यान रखना चाहिए कि हमें ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए जिसका कोई अर्थ न हो। जब कोई भाई किसी विवाद के विषय पर आपका विचार मांगता है, तो क्या आप उससे अधिक घनिष्ठ होने के कारण उसकी बातों पर सहमत होते हैं, जबकि वास्तविकता में आपके और उसके विचार अलग-अलग होते हैं? इसे ही चापलूसी कहते हैं। ऐसा करके हम गंभीरता को नहीं समझ पाते और अपने भाइयों को हानि पहुंचाते हैं।

वाक्यांश लोभ के लिये बहाना, बहाना यूनानी शब्द प्रोफासिस से आता है। अन्य जगहों पर प्रयोग इस शब्द का (प्रेरितों, 27:30; लूका 20:47; फिलिप्पियों 1:18) यह शब्द झूठे कारण को आगे बढ़ाते जाना या सच बात को छुपाने के लिये बाहरी रूप से अच्छा बनना दिखाता है। पौलुस ने इस बात का खण्डन किया कि वह और उसके सहकर्मी अपने लोभ के कारण आये हैं, या वे इसे ईश्वरीय कार्य जताकर बाहरी आडम्बर से छिपाने का प्रयास कर रहे हैं।

लोभ के लिये बहाना वास्तव में चापलूसी का रूप है जिसमें मनुष्य अपना काम निकालने के लिये सच्चाई पर पर्दा या मुखौटा लगा लेता है। पौलुस आरोप से संवेदनशील हो गया था कि थिस्सलुनीकियों के लिये प्रशंसा की भावना में उसकी गंभीरता चालचलन का एक मुखौटा था। लोभ भौतिक वस्तुओं को पाने की असीम इच्छा होती है। इसे पाने के लिये जो भी जरूरी हो लोगों को वह करने के लिये विवश कर देता है। पौलुस ने कहा जब वे थिस्सलुनीके में थे तब अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये उनकी ऐसी कोई भी इच्छा नहीं थी। और उनके पक्ष में परमेश्वर गवाह है (इब्रानियों 6:18; 1 यूहन्ना 5:9)। ये सब उस संदर्भ के कुछ लोगों के कारण था जो पौलुस को बुरी युक्ति करने वाला मनुष्य होने का आरोप लगा रहे थे (आयत 1)।

आयत 6. लोभ की इच्छा से दूर, पौलुस ने कहा कि वह मनुष्यों से आदर (प्रशंसा) नहीं चाहता, उनसे जो थिस्सलुनीके के लोग कहलाते हैं। और न ही वह किसी से चाहता था, जबकि उसके प्रेरित होने के कारण उस पर बड़ी भारी आज्ञा सौंपी गई थी। बोझ यूनानी शब्द बारोस से लिया गया है। जिसका प्रयोग सब के लिये और अर्थ बड़ी भारी आज्ञा देना होता है। कुछ लोग मानते हैं कि इसका अर्थ कष्टप्रद है वही जो परिश्रम का फल प्राप्त करने में होता है (2:9)। और फुटनोट कष्ट या कष्टप्रद, का वैकल्पिक अनुवाद देते हैं। आई. हॉवर्ड मार्शल ने कहा, यह प्रेरितों के आज्ञा देने के अधिकार को बताता है। प्रेरित बहुवचन है, भेजा गया वह वृहत रूप का प्रयोग किया गया है। तीमुथियुस और सीलास इसलिये प्रेरित थे, क्योंकि उन्हें परमेश्वर से यह

अधिकार मिला था (प्रेरितों 14:14 की तुलना में)।

आयत 7. पौलुस ने कहा था थिस्सलुनीके के लोग उसके और उसके सहकर्मियों के लिये कभी भी बोझ नहीं थे, बल्कि पौलुस ने जिस तरह माता जो अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही कोमलता उनके प्रति दिखाई थी। यहां पर कोमलता का यूनानी शब्द नेपिओस है और जिसका अर्थ मिलनसार होता है अर्थात वह मनुष्य जो पहुंच रखता हो। पालन-पोषण करने वाली माता के शब्द ट्रोफोस से आते हैं, बोलचाल की भाषा में जिसका अर्थ देखभाल करने वाली होता है। इसलिये बच्चों को उसके अपने कहा जाता है, वाक्यांश पालन-पोषण करने वाली माता एक अच्छा चित्रण है। चिंता करना थाल्पो से आता है, जो एक मजबूत भावनात्मक बंधन को दर्शाता है। जबकि, पौलुस को स्वयं की तुलना एक पिता से करनी थी (आयत 11; 1 कुरिन्थियों 4:15), परन्तु यहां पर उसने अपनी तुलना एक माता से की यह समझाने के लिये कि वह और उसके सहकर्मी कितने कोमल थे जो ज्यादा कुछ मांग न रखते थे। कोमलता के लिये उसने वह प्रतिरूप दिया जिसमें मनुष्य उसे देख सकता है।

आयत 8. पौलुस ने परमेश्वर का सुसमाचार बांटा (मेलमिलाप का सुसमाचार जो परमेश्वर से आता है), परन्तु भाइयों के लिये उसका प्रेम इतना गहरा था कि वह और उसके सहकर्मी उन्हें बचाने के लिये अपने प्राण दे सकते थे, जिस प्रकार वह अपने यहूदी भाइयों के लिये दे सकता था (रोमियों 9:1-3)। यूनानी शब्द सूखे का अनुवाद जीवन किया गया है। इसका अर्थ बस इतना ही नहीं है कि हम तुम्हारे लिये अपना जीवन देने (अर्पित करने) की इच्छा रखते थे परन्तु हम अपने आपको तुम्हारे लिये देना चाहते है, बिना किसी शर्त के अपने आपको तुम्हारी जगह रखना चाहते हैं। उन्होंने कुछ नहीं रख छोड़ा यह मनन, यदि जरूरी हो तो अपना जीवन दे देने के बारे में बताता है, परन्तु इसका अभिप्राय इससे भी बढ़कर है। पौलुस का इस कार्य में घुसना केवल अनुभव प्राप्त करना नहीं था; परन्तु भावनात्मक भी था।

उसकी सेवकाई की विश्वसनीयता (2:9-12)

क्योंकि हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो; हम ने इसलिये रात दिन काम धंधा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुम में से किसी पर भार न हो। तुम आप ही गवाह हो, और परमेश्वर भी गवाह है कि तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष रहा। तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को उपदेश करते, और शांति देते, और समझाते थे कि तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।

आयत 9. यह आयत हमें आयत 3 का स्मरण कराता है, ऐसा प्रतीत होता है कि यहां पौलुस पर थिस्सुनीकियों के साथ छल करने का प्रयास करने का दोष लगाया गया था। परन्तु, यहां पौलुस इसकी बजाय कि वह उन दूसरों को अपना आकंलन करने की अनुमति देता जो उपस्थित नहीं थे, कहता है कि निश्चय ही भाई स्वयं उसके परिश्रम और कष्ट को स्मरण कर सकते हैं। उन्होंने स्वयं की सहायता के लिये यह कार्य किया था (प्रेरितों 18:3; 2 थिस्सलुनीकियों 3:7-10) ताकि थिस्सलुनीकियों पर आर्थिक रूप से भार न हो। वास्तव में, पौलुस सुसमाचार प्रचार कार्य एवं भोजन की व्यवस्था हेतु रात और दिन दोनों समय व्यस्त था।

परिश्रम का यूनानी शब्द कोपोस यानि कड़ी मेहनत, थका देने वाली काम की प्रवृत्ति को व्यक्त करता है, और कठनाई के लिये यूनानी शब्द मुकथोस उसकी पीड़ा या दर्द को व्यक्त करता है। कोई संदेह नहीं कि दोनों का महत्व होने पर रात और दिन का परिश्रम जरूरी था। उन्होंने स्मरण रखा होगा कि यदि पौलुस का उद्देश्य उनसे लाभ कमाना होता, तो वह अच्छी तरह से सफल नहीं हो पाता।

आयत 10. पौलुस ने कहा, कि जब भाई लोग फिर से सोचें तो वे उसके पक्ष में चरित्र के गवाह होंगे और कहेंगे कि उसका व्यवहार पवित्र (परमेश्वर की सेवा के लिये समर्पित किया हुआ), धार्मिक (परमेश्वर के नियमानुसार चला) और निर्दोष (परमेश्वर के नियमों का उल्लघंन करने का दोष लगाया नहीं जा सकता) रहा। निर्दोष अमेम्सोस पवित्र और धार्मिकता के समान ही होता है, परन्तु नकरात्मक शब्द भाव से निर्दोष मनुष्य वह होता है जो दिए गए मापदण्ड में बिना निंदा के खरा उतरता है।

यह थिस्सलुनीकियों के बीच व्यवहार को संक्षिप्त में बताता है। इस प्रभावशीलता के वे गवाह थे, और परमेश्वर भी, जो सब कुछ देख रहा है। मसीही लोगों को विश्वासियों भी कहा जाता है।

आयत 11. आयत 7 में, पौलुस ने कहा कि उनके लिये वह एक माता के समान है, परन्तु यहां पर उसने पिता का प्रतिरूप प्रस्तुत किया है, जो अपने बालकों के साथ काम कर रहा है। वह कोमलता का वर्णन कर रहा था जिसका प्रयोग उसने किया था, जो हमेशा मातृत्व के लिये अधिक जाना जाता है। यहां पर, वह उन कार्यों का वर्णन कर रहा था, जो एक माता को करना होता है। पारिवारिक छवि का प्रयोग कर बताना चाहता था कि वह उन्हें कितना प्रिय समझता था (जैसे एक बच्चे के लिये उसके माता-पिता) और उसका यह रिश्ता उनमें से हर एक के साथ था, न कि वह उन सब के साथ एक समूह के रूप में था। जैसे एक पिता करता है, वह हमेशा शांति देता या अपने बच्चों के लिये हृदय निछावर करता था। वह निरंतर उपदेश भी देता था (सहायता के लिये हर एक को बुलाता) और परमेश्वर के योग्य जीवन जीने के लिए समझाता था (आयत 12)।

समझाते यूनानी शब्द मरतुरोमई का एक क्रिया शब्द है जिसका सही अर्थ एक गवाह को आगे बढ़ाना होता है और इसलिये सच्चाई से घोषणा करना (हो सकता है गवाह बनने के लिये परमेश्वर की बुलाहट की सोच के साथ)। यह आलसी या उसी के समान लोगों को सम्बोधित किए गए कठोर शब्दों का प्रयोग हो सकता है।

आयत 12. परमेश्वर जिसने पौलुस से बात की और वह वही है जो तुम्हें (कलीसिया; मत्ती 16:18; कुलुस्सियों 1:13) अपने राज्य में बुलाता है (वह अपने सुसमाचार के द्वारा सभी लोगों को बुलाता है, 2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। हम उसकी कलीसिया में बपतिस्मा पाए हुए हैं, जो उसकी देह है (रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 1:18)। एक प्रकार से, मसीही परमेश्वर की महिमा को पृथ्वी पर प्रगट करते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18), परन्तु हम न्याय के बाद उससे भी बड़ी महिमा को प्रगट करेंगे (कुलुस्सियों 3:4; 1 पतरस 5:10)।